REET 2025
LEVEL-1 & 2
वंदन बैच
हिंदी
सन्धि
Part -3
LIVE
16-01-2025 11:00 AM

व्यंजन सन्धि – यदि किसी व्यंजन के आगे किसी स्वर अथवा व्यंजन का मेल होने से व्यंजन में जो परिवर्तन होता है। उसे व्यंजन सन्धि कहते है।

प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम
क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म

कं + म/न = ङ

च + म/न = ञ

ट — ण

त — न

प — म

व्यंजन सन्धि के नियम :-

01. यदि स्पर्श व्यंजनों के प्रथम अर्थात क्, च्, ट्, त्, प्, के बाद किसी वर्ग का तीसरा, चौथा, स्वर या अन्तस्थ: व्यंजन (य, र,
ग ज ड द ब
ल, व) आए तो वर्ग का पहला वर्ण क, च, ट, त, प के स्थान पर अपने ही वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है। जैसे-

वाक् + जाल = वाग्जाल

सत् + आचार = सदाचार

दिक् + अम्बर = दिगम्बर

वाक् + ईश = वागीश

वाक् + दान = वाग्दान

उत् + घाटन = उद्घाटन

ऋक् + वेद = ऋग्वेद

जगत् + ईश = जगदीश

वाक् + ईश्वरी = वागीश्वरी

सत् + गुण = सद्गुण

दिक् + भ्रम = दिग्भ्रम

दिक् + विजय = दिग्विजय

प्राक् + ऐतिहासिक = प्रागैतिहासिक

व्यंजन + स्वर = तीसरा पूर्ण

व्यंजन + व्यंजन = आधा तीसरा अक्षर

क, च, ट, त, प

म, न

02. यदि स्पर्श व्यंजनों के प्रथम अक्षर के आगे कोई अनुनासिक व्यंजन आये तो उसके स्थान पर उसी वर्ग का आधा पांचवा अक्षर हो जाता है। जैसे –

वाक् + मय = वाङ्मय

उत् + मत्त = उन्मत्त

षट् + मास = षण्मास

अच् + नाश = अञ्नाश

अप् + मय = अम्मय

उत् + नयन = उन्नयन

जगत् + नाथ = जगन्नाथ

उत् + मूलन = उन्मूलन

03. जब किसी ह्रस्व या दीर्घ स्वर के आगे छ आता है तो छ के पहले च् बढ़ जाता है। जैसे-

परि + छेद = परिच्छेद

वि + छेद = विच्छेद

लक्ष्मी + छाया = लक्ष्मीच्छाया

वृक्ष + छाया = वृक्षच्छाया

आ + छादन = आच्छादन

स्व + छन्द = स्वच्छन्द

अनु + छेद = अनुच्छेद

य, व, र, ल   श, ष, स, ह

04. यदि म के आगे कोई अन्तस्थ व्यंजन या ऊष्म व्यंजन आए तो म अनुस्वार में बदल जाता है। अं

जैसे - सम् + सार = संसार   सम् + युक्त = संयुक्त

सम् + योग = संयोग   सम् + लग्न = संलग्न

सम् + रक्षक = संरक्षक   सम् + शोधन = संशोधन

सम् + हार = संहार   सम् + वाद = संवाद

05. यदि अ, आ को छोड़कर किसी भी स्वर के आगे स् आता है स् के स्थान पर ष् हो जाता है।

जैसे – अभि + सेक = अभिषेक

इ वि + सम = विषम

इ नि + सेध = निषेध

उ सु + सुप्त = सुषुप्त

ष् + त = ट
ष् + थ = ठ

06. ष् के पश्चात त या थ आने पर उसके स्थान पर क्रमश: ट और ठ हो जाता है।

जैसे –

आकृष् + त = आकृष्ट

दुष् + त = दुष्ट

पृष् + थ = पृष्ठ

षष् + थ = षष्ठ

निकृष् + त = निकृष्ट

उत्कृष् + त = उत्कृष्ट

षष् + थ = षष्ठ

सृष् + ति = सृष्टि

पुष् + त = पुष्ट

इष् + त = इष्ट

07. त् के बाद यदि च, छ हो तो त् का च् हो जाता है। जैसे –

उत् + चारण = उच्चारण

जगत् + छाया = जगच्छाया

उत् + चरित = उच्चरित

सत् + चरित्र = सच्चरित्र

शरत् + चन्द्र = शरच्चन्द्र

08. त् के बाद यदि ज, झ हो तो त् ज् में बदल जाता है। जैसे –

सत् + जन = सज्जन

विपत् + जाल = विपज्जाल

जगत् + जननी = जगज्जननी

उत् + ज्वल = उज्ज्वल

उत् + झटिका = उज्झटिका

त् + ट | ड → ट्, ड्

09. त् के बाद यदि ट, ड हो तो त् क्रमशः ट्, ड् में बदल जाता है। जैसे –

बृहत् + टीका = बृहट्टीका

उत् + डयन = उड्डयन

10. त् के बाद यदि ल हो तो त् , ल् में बदल जाता है। जैसे –

उत् + लास = उल्लास

तत् + लीन = तल्लीन

उत् + लेख = उल्लेख

उत् + लंघन = उल्लंघन

त् + श → च् छ

11. त् के बाद यदि श् हो तो त् का च् और श् का छ हो जाता है।

जैसे –

उत् + श्वास = उच्छ्वास

सत् + शास्त्र = सच्छास्त्र

उत् + शिष्ट = उच्छिष्ट

12. त के बाद यदि ह हो तो त् के स्थान पर द और ह के स्थान पर ध् हो जाता है। जैसे –

तत् + हित = तद्धित

उत् + हार = उद्धार

उत् + हत = उद्धत

उत् + हरण = उद्धरण

03. विसर्ग सन्धि – यदि विसर्ग के आगे किसी स्वर अथवा व्यंजन का मेल हो विसर्ग में जो परिवर्तन होता है

01. यदि विसर्ग के बाद च या छ हो तो विसर्ग श् में, ट या ठ हो तो ष् में और त या थ हो तो स् में बदल जाता है। जैसे –

ः = च/छ = श्

ः = ट/ठ = ष्

ः = त/थ = स्

निः + चय = निश्चय

नमः + ते = नमस्ते

निः + छल = निश्छल

दुः + तर = दुस्तर

निः + ठुर = निष्ठुर

मनः + ताप = मनस्ताप

धनुः + टंकार = धनुष्टंकार

निः + तेज = निस्तेज

निः + तार = निस्तार

मरुः + थल = मरुस्थल

2. यदि विसर्ग के पहले अ और बाद में अ अथवा प्रत्येक वर्ग का तीसरा, चौथा पांचवा वर्ण अथवा य, र, ल, व एंव ह हो तो विसर्ग का ओ हो जाता है। जैसे

अ मनः + अनुकूल = मनोनुकूल

अ मनः + योग = मनोयोग

अ अधः + गति = अधोगति

अ वयः + वृद्ध = वयोवृद्ध

अ तपः + भूमि = तपोभूमि

मनः + अभिलाषा = मनोभिलाषा

परः + अक्ष = परोक्ष

मनः + अभिराम = मनोभिराम

यशः + वर्धन = यशोवर्धन

तेजः + मूर्ति = तेजोमूर्ति

यशः + दा = यशोदा

तपः + बल = तपोबल

पयः + धन = पयोधन

मनः + हर = मनोहर

मनः + रथ = मनोरथ

सरः + रुह = सरोरुह

सरः + वर = सरोवर

पयः + धि = पयोधि

मनः + वांछा = मनोवांछा

अधः + वस्त्र = अधोवस्त्र

3. यदि विसर्ग के पहले अ, आ को छोड़कर कोई दूसरा स्वर हो और बाद में आ, उ, ऊ या तीसरा , चौथा, पांचवां वर्ण या य, र, ल, व में से कोई हो तो विसर्ग का र या अर् हो जाता है। जैसे –

निः + अर्थक = निरर्थक

दुः + जन = दुर्जन

दुः + आत्मा = दुरात्मा

आशीः + वाद = आशीर्वाद

निः + धन = निर्धन

प्रादुः + भाव = प्रादुर्भाव

निः + यात = निर्यात

निः + मम = निर्मम

आविः + भाव = आविर्भाव

यजुः + वेद = यजुर्वेद

4. यदि विसर्ग के पहले इ या उ हो तो क, ख, प, फ के रहने पर विसर्ग का ष् हो जाता है। जैसे –

दुः + कर्म = दुष्कर्म

निः + कंटक = निष्कंटक

निः + कपट = निष्कपट

बहिः + कार = बहिष्कार

दुः + प्रकृति = दुष्प्रकृति

आविः + कार = आविष्कार

निः + फल = निष्फल

निः + प्राण = निष्प्राण

5. यदि विसर्ग के बाद र हो तो विसर्ग लुप्त हो जाता है और उस के पहले का स्वर दीर्घ हो जाता है। जैसे –

निः + रोग = नीरोग

निः + रज = नीरज

निः + रस = नीरस

निः + रुज = नीरुज

6. यदि विसर्ग के पूर्व अ हो तथा बाद में क या प हो तो विसर्ग में कोई परिवर्तन नहीं होता। जैसे-

प्रातः + काल = प्रातःकाल

अतंः + करण = अंतःकरण

अधः + पतन = अधःपतन

पयः + पान = पयःपान

रजः + कण = रजःकण

अपवाद – (i) नमः एंव पुरः में विसर्ग का स् हो जाता है। जैसे -

नमः + कार = नमस्कार

पुरः + कार = पुरस्कार